पूर्व प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप

पद्मा यादव *

बच्चे किसी भी राष्ट्र के महानतम संसाधन स्रोत हैं। उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास में परिवार और विद्यालय दोनों की अहम् भूमिका होती है। शोध परिणामों के आधार पर स्पष्ट है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों की आगे की शिक्षा और जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण घटक साबित होती है। इस तथ्य को स्वीकारना होगा कि बच्चों के जीवन के प्रांरभ के 6 वर्ष उनके व्यक्तित्व विकास की अत्यंत नाज़ुक अवस्था है और इसका असर उनकी बाद की शिक्षा पर होता है। हमारे देश में पूर्व प्राथमिक शिक्षा विभिन्न रूपों में उपलब्ध है। शहरी क्षेत्रों में इसका संगठित स्वरूप देखने को मिलता है तथा अन्य क्षेत्रों में समेकित बाल विकास योजना के अंतर्गत आँगनवाड़ियाँ और बालवाड़ियाँ इस कार्य में सहयोग देती हैं। प्राय: देखा गया है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा संचालन करने वाले अधिकांश विद्यालयों में ऐसे पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं जो बच्चों के विकासात्मक स्तर की तुलना में कहीं अधिक बोझिल होते हैं। अभिभावकगण भी प्राय: चाहते हैं कि उनके बच्चों को अधिक से अधिक सिखाया जाए और इस प्रकार पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा का निम्नवत प्रसार मात्र बनकर रह गई है। कैसा हो पूर्व प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप ? क्या करें शिक्षक ? प्रस्तुत लेख में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप की चर्चा की गई है जो कि एन.सी.ई.आर.टी. के प्रायोगिक नर्सरी स्कूल से प्राप्त अनुभवों, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के मूल्यों पर आधारित सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर आधारित है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का महत्व

पूर्व प्राथमिक शिक्षा आवश्यक है क्योंकि बच्चों के जीवन के प्रथम छह वर्ष उसके विकास के लिए बहुत महत्वतपूर्ण हैं। इन वर्षों में बच्चा जिस गति से सीखता है, उस गति से आगे कभी नहीं सीखता। पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चे के संपूर्ण

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

जीवन की तैयारी है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों में छिपी प्रतिभाओं और छिपी प्रतिभाओं और कौशलों को उभारने में सहायता मिलती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों में सुरक्षा व आत्मविश्वास की भावना का विकास करने में सहायता करती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत रोचक, मनोरंजक तथा उद्देश्यपूर्ण खेल-क्रियाओं के माध्यम से बच्चों में अच्छी आदतों एवं नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा में स्वच्छता और स्वास्थ्य आदतों के विकास पर बहुत अधिक बल दिया जाता है, क्योंकि 4-6 वर्ष की अवस्था, सबसे अधिक संवेदनशील होती है। अत: इस समय सीखी हुई आदतें प्राय: स्थायी होती हैं। रोचक एवं शिक्षाप्रद खेल-क्रियाओं के माध्यम से शुरू करके पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों में शिक्षा के प्रति रुचि को उत्पन्न करती है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा शैक्षिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए परिवारों के बच्चों के विकास को भी गति मिल सकती है। छोटे बच्चों के बहुत से दोष-बीमारियाँ यदि शुरू में पता चल जाएँ तो उनका इलाज होना सरल हो जाता है। यह केवल पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा ही संभव है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा बालिका शिक्षा के प्रसार को बढ़ावा देकर शिक्षा के सार्वजनीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। कई परिवारों में लड़कियों को विद्यालय जाने से रोक दिया जाता है क्योंकि उन्हें अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने के लिए घर पर ही रहना पड़ता है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्रों के खुल जाने से उनके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा की व्यवस्था हो जाती है और ये लड़कियाँ प्राथमिक विद्यालय जा सकती हैं।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार किया जा सकता है। जिन बच्चों को उचित पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हो जाती है उनके विद्यालय में नामांकन और ठहराव की संभावना बढ़ जाती है। प्रांरभिक वर्षों में मिले उचित मार्गदर्शन से बच्चे के विकास व उसकी क्षमताओं को विकसित करने में सहायता मिलती है तथा प्राथमिक विद्यालय में बच्चे उचित रूप से समायोजन कर सकने में समर्थ होते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त बच्चे दूसरे बच्चों की अपेक्षा सरलता से सीख पाते हैं। उनकी शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ जाती है तथा फ़ेल होने की संभावना न के बराबर होती है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य एवं पद्धति

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। यह बच्चों के समग्र विकास पर केंद्रित है तथा बच्चों के बौद्धिक, भाषायी, सामाजिक, संवेगात्मक तथा शारीरिक विकास के लिए प्रेरणात्मक खेल वातावरण प्रदान करती है। यह एक बाल केंद्रित कार्यक्रम है जिसमें खेल तथा क्रियाविधि अपनाई जाती है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की पाठ्यचर्या एवं वार्षिक कार्यक्रम

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में विषय आधारित पद्धति का प्रयोग किया जाता है तथा गतिविधियों के आयोजन में बच्चों की आयु एवं विकास को दृष्टिगत रखा जाता है जिससे बच्चों का शारीरिक विकास हो सके, बच्चों को पढ़ने-लिखने तथा गणित

की तैयारी में मदद मिले। यह बच्चों को औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करता है साथ ही बच्चों में अन्य क्षमताओं को विकसित करता है, जैसे — अन्य बच्चों के साथ समायोजन करना, एक निर्धारित कार्यक्रम का अनुसरण करना व एक निश्चित समय तक बैठकर एक गतिविधि में ध्यान केंद्रित करना आदि। इन क्षमताओं और कौशलों के विकास से विद्यालय के आरंभिक वर्षों में शिशु को समायोजन में सहायता मिलती है।

इसके अतिरिक्त बच्चों की सूक्ष्म माँसपेशियों को विकसित करने के लिए कक्षा में विभिन्न प्रकार की सृजनात्मक क्रियाएँ करवाई जाती हैं, जैसे — पेपर फोल्डिंग, पेंटिग, कागज़ फाड़ना, काटना, चिपकाना, मिट्टी से खेल-खिलौने बनाना इत्यादि। कक्षा के भीतर बच्चों को खेल-खिलौने, गुड़ियों आदि से खेलने के अवसर दिए जाते हैं तथा कक्षा के बाहर झूला झूलने इत्यादि के अलावा कहीं-कहीं रेत, टायर ट्राली आदि से खेलने के भी भरपूर अवसर दिए जाते हैं, इससे बच्चे उत्साहित होते हैं ।

प्राय: देखा गया है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा संचालन करने वाले अधिकांश विद्यालयों में ऐसे पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं जो बच्चों के विकासात्मक स्तर की तुलना में कहीं अधिक बोझिल होते हैं। अभिभावक गण भी प्राय: चाहते हैं कि उनके बच्चों को अधिक से अधिक सिखाया जाए और इस प्रकार पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा का निम्नवत प्रसार मात्र बनकर रह गई है। इस संदर्भ में बाल मनोविज्ञान का अल्प ज्ञान बच्चों पर बढ़ते बोझ का एक कारण माना जा सकता है।

यह एक मानी हुई बात है कि बच्चों में सीखने और अपने आस-पास की दुनिया को समझने की स्वाभाविक इच्छा होती है। इसलिए शुरुआती वर्षों में अधिगम बच्चों की अभिरुचियों और प्राथमिकताओं के मुताबिक होना चाहिए और बच्चों के अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए न कि औपचारिक।

शिक्षा में वही भाषा प्रयोग में लाई जानी चाहिए जिससे बच्चा अपने परिवेश में परिचित हो, वहीं अगर कक्षा बहुभाषी और अनौपचारिक हो तो बच्चों को दूसरी भाषाएँ, जैसे — अंग्रेज़ी इत्यादि सीखने की जल्द शुरुआत हो जाती है और बच्चे असहज नहीं होते।

कैसा हो पूर्व प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप– क्या करें शिक्षक?

बच्चे के सही विकास के लिए उसे एक उचित वातावरण की आवश्यकता होती है, जिसमें शामिल हैं — प्यार और प्रोत्साहन, उचित भोजन, खिलौने से खेलना, माता-पिता का बच्चों से बातचीत करना।

सबसे पहले बच्चों में सुरक्षा की भावना एवं आत्मविश्वास विकसित करने के लिए बच्चों के साथ प्यार से पेश आएँ, बच्चों को मारें-पीटें नहीं, प्यार से समझाएँ, दूसरों के सामने किसी बच्चे की निंदा न करें, एक बच्चे की दूसरे से तुलना न करें, बच्चों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनें, बच्चों को उनकी आयु व क्षमता के अनुसार ही क्रियाएँ दें, जिससे उन्हें सफ़लता की अनुभूति हो, बच्चों के छोटे-छोटे प्रयासों को सराहें, बच्चों को हल्के-फुल्के काम करने के अवसर दें।

बच्चों में अच्छी आदतें विकसित करने के लिए बच्चों को साफ़-सुथरा रहने के लिए प्रेरित करना चाहिए, बच्चों को नियमित रूप से समय पर विद्यालय आने के लिए प्रेरित करना चाहिए, खाने से पहले व बाद में हाथ धुलाना चाहिए, नियमित रूप से नाखून, दाँत, नाक, कान की जाँच करना चाहिए। अपनी बारी का इंतज़ार करने की आदत डालें, मिल-जुलकर रहना व मिल-बाँटकर प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें, बड़ों का आदर करना, आस-पास के वातावण की देखभाल करना इत्यादि सिखाएँ।

बच्चों को सोचने-समझने व करके सीखने के अवसर दें। इसके लिए बच्चों को प्रश्न करने के लिए प्रोत्साहित करें, उनके प्रश्नों के उत्तर धैर्यपूर्वक दें, बच्चों को स्वयं सोचने-समझने का अवसर दें तथा उन्हें स्वयं हल ढूँढने के अवसर दें। अवसर दें कि बच्चे कुछ चीज़ों को क्रम से सोचें, आस-पास के वातावरण को जानें, समान-असमान वस्तुओं को छाँटें, छोटी-छोटी समस्याओं के हल निकालें, अपनी पाँचों इंद्रियों का इस्तेमाल करें, अपनी स्मरण शक्ति का प्रयोग करें, विभिन्न रंगों व आकारों को जानें व पहचानें।

बड़ी माँसपेशियों को विकसित करने हेतु अनेक क्रियाएँ कराई जा सकती हैं, जैसे — गोल दायरे में चलना, भागना, कूदना, उछलना, फेंकना, पकड़ना, सरकाना,पलटना, संतुलन बनाए रखना इत्यादि।

छोटी माँसपेशियों को विकसित करने हेतु जो गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं, वो हैं — मोती पिरोना, ब्लॉक्स से खेलना, फ़ीता पिरोना, कागज़ फ़ाड़ना व चिपकाना, रेत और मिट्टी से खेलना, पानी से खेलना इत्यादि।

कभी-कभी छोटी माँसपेशियों को विकसित करने हेतु क्रियाएँ कराने के लिए सामग्री नहीं होती ऐसे में पत्तों, टहनियों, पंख, फूल, बीज इत्यादि का प्रयोग कर गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं, जैसे — छाँटना, रंग भरना, फूलों-पत्तों को कुचल कर पिरोना इत्यादि।

बच्चों में बोलने व सुनने की क्षमता को विकसित करने हेतु बच्चों से स्वतंत्र वार्तालाप करें, कहानी व गीत सुनें व सुनाएँ, विभिन्न आवाज़ों को पहचानने का खेल कराएँ, चित्र को देखकर बच्चे उसके बारे में बताएँ, कहानी व अभिनय कराएँ, कठपुतली के खेल कराएँ, पहेलियाँ बूझें व बुझाएँ, गुड़िया का खेल, चोर-सिपाही आदि काल्पनिक खेलों की सुविधा दें।

बच्चे अपनी भावना को व्यक्त कर सकें इसलिए उन्हें अनेक अवसर प्रदान करें, जैसे — स्लेट/फर्श पर चॉक से चित्र बनाना, मिट्टी से खेलना, फूल, टहनी, बीजों, पत्तों से नमूने बनाना, विभिन्न पत्तों से अपनी पसंद की आकृति बनाना, कहानी पर अभिनय करना, लय व ताल पर नाचना, गुड़िया का खेल जैसे अन्य काल्पनिक खेल, मूक-अभिनय/अभिनय द्वारा पहचानने के खेल इत्यादि।

पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चों को अत्यंत औपचारिक एवं नियंत्रित रूप से लिखना, पढ़ना व गणित नहीं सिखाना चाहिए क्योंकि इस उम्र में बच्चे मानसिक और शारीरिक रूप से पढ़ने, लिखने और गणित के लिए तैयार नहीं होते हैं।

पढ़ने की तैयारी हेतु बच्चों को अवसर दें कि वे विभिन्न आकारों को पहचान सकें। ऐसी क्रियाएँ कराएँ जिससे बच्चे किसी भी शब्द की शुरू या

आखिरी ध्वनि पहचानें और उससे नया शब्द बना सकें। एक ही ध्वनि से शुरू होने वाली वस्तुओं, चित्रों को अलग कर सकें।

लिखने की तैयारी के लिए अनेक गतिविधियाँ करवाएँ, जैसे – दिए गए आकार में रंग भरना, नमूने बनाना, छापना, बिंदु से बिंदु मिलाना, बाएँ से दाएँ की दिशा में काम करना इत्यादि।

गणित की तैयारी के लिए बच्चों को गिनती सिखाने से पहले उन्हें पूर्व संख्या संबंधी विभिन्न अवधारणाओं से संबंधित क्रियाएँ करवाएँ, जैसे बड़ा-छोटा, दायाँ-बायाँ, कम-ज़्यादा, दूर-पास, लम्बा-नाटा, चौड़ा-संकरा, हल्का-भारी, ऊँचा-नीचा, ऊपर-नीचे, अंदर-बाहर, आगे-पीछे, बीच में, पहले-बाद में, लम्बा-छोटा। उदाहरण के लिए, बड़ा-छोटा, क्रियाएँ कराने के लिए बड़ी-छोटी, वस्तुओं को अलग-अलग छाँटना, जैसे — बड़े पत्ते, छोटे पत्ते, बड़े पत्थर, बीज, फूल, पंख आदि, बड़ा-छोटा, पहचानने पर, बड़े से छोटे के क्रम में लगवाएँ, बड़ा पत्थर उससे थोड़ा छोटा पत्थर, सबसे छोटा पत्थर आदि इत्यादि।

इतनी सारी खेल क्रियाएँ करवाने हेतु एक संतुलित कार्यक्रम बनाना चाहिए। ऐसा कार्यक्रम बनाएँ जिसमें बच्चे के सर्वांगीण विकास से संबंधित क्रियाएँ हों। कुछ स्वच्छंद और कुछ निर्देशित क्रियाएँ, कुछ उछल-कूद के खेल हों, कुछ शांत खेल, कुछ विद्यालय के भीतर के खेल हों तो कुछ विद्यालय के बाहर के खेल, कुछ क्रियाएँ बड़े समूह में, कुछ छोटे समूह में व कुछ अकेले करने वाली हों।

कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए आप हर सप्ताह अलग-अलग विषयों पर बातचीत कर सकती हैं और उन्हीं विषयों से संबंधित क्रियाएँ भी करा सकती हैं, उदाहरण के लिए; मैं और मेरे बारे में, मेरा परिवार, रंग, आकार, सफ़ाई व अच्छी आदतें, शरीर के अंग, जानवर, पक्षी, फल व सब्जियाँ, रसोई घर व बर्तन आदि हमारे मददगार, घर, कपड़े, गर्मी, जाड़ा, वर्षा, बाज़ार, यातायात के साधन, पानी, पेड़-पौधे, हवाएँ, आकाश-तारे, सूरज, चाँद, प्रकाश विभिन्न धार्मिक त्योहार – दीवाली, होली, दशहरा, ईद, क्रिसमस, राष्ट्रीय त्योहार – 15 अगस्त, 26 जनवरी।

यदि बच्चे मिली-जुली आयु के हों तो उन्हें उनकी आयु के अनुसार अलग-अलग क्रियाएँ दी जानी चाहिए। बच्चों की आयु के अनुसार छोटे समूह में क्रियाएँ दें छोटे व बड़े बच्चों के दो अलग-अलग समूह बनाएँ। सहायिका और शिक्षिका बारी-बारी से अलग-अलग समूह को क्रिया करा सकती हैं, कम आयु के बच्चों को स्वतंत्र खेल दें तथा 4–6 वर्ष के बच्चों से निर्देशित क्रिया कराएँ।

अक्सर जगह कम होने के कारण खेल क्रियाएँ कराने में बड़ी समस्याएँ आती हैं। इसके लिए कमरे के अंदर के सामान को इस प्रकार सजाएँ जिससे ज़्यादा से ज़्यादा जगह बन सके, कुछ बच्चों से विद्यालय के भीतर क्रियाएँ कराएँ और कुछ को बाहर क्रिया आयोजित करते समय कुर्सी आदि को बाहर निकाल दें और बच्चों के साथ नीचे बैठकर क्रिया करें।

सामग्री को कक्षा में सजाने के लिए रस्सी पर चित्र लटकाकर बाँध सकते हैं। पुरानी साड़ी, टाट, चादर को फैलाकर इस पर चित्रों को पिन से लटका

सकते हैं। अलमारियों/मेज़ आदि पर सामग्री सजाई जा सकती है।

कई बार ऐसा भी होता है कि सामग्री की कमी हो जाती है तो बिना सामग्री के भी क्रियाएँ करवाई जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों के कपड़ों द्वारा, फूल, पत्थर, बीज, पत्ते आदि द्वारा, स्वयं बच्चों द्वारा बच्चों को लंबे से छोटे के क्रम में खड़ा करना, शाला में उपलब्ध सामान, जैसे — स्लेट, चार्ट, ब्रेड के कागज़ आदि के द्वारा।

आस-पास में पाई जाने वाली बेकार पड़ी वस्तुओं से भी बच्चों के लिए खेल-खिलौने बनाए जा सकते हैं, जैसे — माचिस की डिब्बियों से मोटर झुनझुना आदि, पाउडर के डिब्बों से झुनझुना, ढोलक, डमरू, पाउडर के डिब्बों आदि से खींचने वाली गाड़ी, बोतलों के ढक्कनों को तार में पिरोकर माला आदि बनाना, प्लास्टिक की बोतलों से कठपुतली आदि।

यदि उपर्युक्त खेल-क्रियाएँ सही तरीके से रोज़ बदल-बदलकर करवाई जाएँ तो बच्चे खुशी-खुशी विद्यालयों में आएँगे।

कुछ बच्चे शर्माते हैं और कुछ चंचल व शरारती होते हैं। जो बच्चे शर्माते हैं उन्हें अपने पास बिठाएँ, बच्चे को बोलने का अधिक से अधिक अवसर दें, बच्चे की रुचि के अनुसार क्रिया दें, छोटे समूह में क्रिया करें, बच्चों की झिझक का कारण ढूँढें, माता-पिता से बात करें। जो बच्चे बहुत चंचल व शरारती होते हैं उनके लिए कारण ढूँढें, माता-पिता से बात करें। बच्चे को व्यस्त रखें। रुचि व क्षमता के अनुसार क्रिया दें, ऐसी क्रियाएँ दें जहाँ बच्चा अपनी शक्ति का सही इस्तेमाल कर सके।

विद्यालय में कुछ ऐसे बच्चे भी होते हैं जिनकी कुछ विशेष आवश्यकताएँ होती हैं ऐसे में जिन बच्चों को कम दिखाई देता है, उन्हें छूने-सूँघने व सुनने की क्रियाएँ दें। जिन बच्चों को चलने में असुविधा होती है उनकी सुविधा का उचित प्रबंध करें। जो बच्चे सुन व बोल नहीं सकते वो देखकर ज़्यादा सीखते हैं। आस-पास की वस्तुओं द्वारा उन्हें सीखने का अवसर दें, जो बच्चे मंदबुद्धि होते हैं उन्हें उनकी क्षमता के अनुसार ही क्रियाएँ दें, माता-पिता को समझाएँ कि वे इन बच्चों को स्वीकार करें व भरपूर प्यार दें। विद्यालय में ऐसा माहौल बनाएँ कि ये बच्चे दूसरे बच्चों से हिलमिल कर रहें, बच्चों को इस बात का आभास दिलाएँ कि उनके इन साथियों को दया की नहीं मित्रता व अपनत्व की आवश्यकता है। इन बच्चों की क्षमता के अनुसार क्रियाएँ कराएँ जिससे उनमें सफ़लता की अनुभूति हो, बच्चे की असमर्थता के अनुसार जो भी उपलब्ध विशेष सेवाएँ हैं, उसके बारे में माता-पिता को सूचित करें।

बच्चों के साथ क्रियाएँ व खेल कराते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें —

- हर बच्चे को मौका दें, सभी बच्चों को खेल में शामिल करें, बच्चों की बात को ध्यान से सुनें और हर बच्चे को अपनी बात कहने का अवसर दें, कोई भी क्रिया 15 या 20 मिनट से अधिक समय की न हो और यदि किसी क्रिया में बच्चे बहुत रुचि ले रहे हों तो उसे अचानक बंद न करें। मिली-जुली आयु के बच्चों के साथ

क्रिया कराते समय छोटे बच्चों को आगे बिठाएँ और उन्हें क्रिया में भाग लेने का मौका दें। जहाँ संभव हो वहाँ बड़े बच्चों की सहायता से छोटे बच्चों से क्रियाएँ करवाएँ, तेज़ क्रियाओं के बाद शांत क्रियाएँ करवाएँ। समय, मौसम और अवसर आदि को ध्यान में रखकर क्रियाओं का चुनाव करें, कक्षा में यदि 5 वर्ष से अधिक आयु के बच्चे आते हों तो उन्हें पढ़ना-लिखना और गणित सिखाएँ। प्रतिभावान कुशल अभिभावकों को केंद्र में आमंत्रित करके बच्चों को उनसे सीखने का अवसर दें।

- बच्चों को वस्तुओं और सामग्री का बिना रोक-टोक के प्रयोग करने दें। बच्चों को निरंतर नवीन एवं विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त करने के अवसर देने का प्रयत्न करें, चुपचाप रहने वाले बच्चे को भी प्रोत्साहित करें पर मजबूर न करें। बच्चे की प्रशंसा करके उन्हें खुलने का अवसर दें। बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में मिल-जुलकर काम करने और खेलने के अवसर दें, हमेशा विनम्रता एवं शिष्टतापूर्वक बातें करें तथा शुद्ध भाषा का प्रयोग करें। केवल उन्हीं बच्चों की बातें न सुनें जो हर समय बोलते हैं और बोलने की पहल करते हैं, अन्य बच्चों को भी बोलने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों की उपलब्धियों की तुलना न करें। हर बच्चा एक जैसा नहीं होता। हर बच्चे पर ध्यान दें, बच्चे को उसके नाम से पुकारें, इससे उनमें आत्म गौरव की भावना जागेगी। लड़का-लड़की एक समान होते हैं। उनसे एक जैसा व्यवहार करें।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष में दो बार शिक्षिकाओं की निगरानी में बच्चों को भ्रमण के लिए चिड़ियाघर, म्यूज़ियम आदि ले जाया जाना चाहिए। इससे बच्चों का मनोरंजन होने के साथ ही निरीक्षण क्षमता विकसित होती है, सुनने का कौशल विकसित होता है, सामाजिक एवं भावानात्मक विकास होता है, वार्तालाप सुदृढ़ होता है तथा पर्यावरण संबंधित ज्ञान अर्जित करने के अवसर मिलते हैं।

प्रतिवर्ष विद्यालयों में बाल मेले का आयोजन किया जाना चाहिए जहाँ बच्चों एवं अभिभावकों के लिए अनेक क्रियाकलाप आयोजित किए जाने चाहिए। विद्यालय का वार्षिक समारोह वर्ष में आने वाले विभिन्न त्योहार तथा बाल-दिवस विद्यालयों में बड़े उत्साह के साथ मनाए जाने चाहिए।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बच्चे का मूल्याँकन

पूर्व प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम केंद्रित न होकर विकासोन्मुख है। अत: बाल विकास के हर पक्ष, जैसे — सामाजिक, संवेगात्माक, शारीरिक, संज्ञानात्मक तथा भाषायिक, विकास का सतत अनौपचारिक मूल्याँकन किया जाना चाहिए।

- शिशु का मूल्याँकन व्याक्तिगत होना चाहिए तथा विकास के हर पक्ष का मूल्याँकन होना चाहिए, जैसे – सामाजिक संवेगात्मक, शारीरिक, संज्ञानात्मक और भाषा का विकास।
- निरंतर मूल्याँकन मुख्य रूप से बच्चे के व्यवहार तथा विभिन्न खेल क्रियाओं के समय उसकी प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण करके होना चाहिए

जैसे – पहेलियों के द्वारा निर्देशित भाषायी एवं संज्ञानात्मक क्रियाओं, खेलों आदि के द्वारा। साढ़े चार से छह वर्ष के बच्चों के लिए अभ्याभ शीट भी तैयार की जा सकती है।

- इस आयु स्तर के बच्चों को पढ़ने, लिखने व गणित का औपचारिक शिक्षण नहीं कराया जाता, अत: उनका मूल्याँकन प्रमुख रूप से अवलोकन पर आधारित है। उनके व्यवहारगत परिवर्तनों का अभिरुचियों के परिमार्जन और कौशलों के विकास का अवलोकन है।
- निरंतर मूल्याँकन के अतिरिक्त प्रत्येक सत्र में भी बच्चों का मूल्याँकन होना चाहिए। प्रत्येक सत्र के प्रगति पत्र को अभिभावकों को दिखाकर उनसे बच्चों के संबंध में परामर्श करना चाहिए।
- प्रत्येक सत्र का मूल्याँकन निर्धारित उद्देश्यों तथा उनकी पूर्ति के लिए किए गए कार्यक्रमों पर आधारित होना चाहिए।
- सतत् मूल्याँकन द्वारा उन बच्चों का पता लगाना चाहिए जिनकी विशेष आवश्यकताएँ हों। आवश्यकतानुसार बच्चों को छोटे समूहों में बाँटकर कुछ बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है। छोटे समूह की क्रियाओं में इन बच्चों को अपनी गति से सीखने और प्रगति करने का अवसर मिलता है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही शिक्षिका को उनके लिए क्रियाओं की योजना बनानी चाहिए।

हर तीन महीने बाद स्कूल में माता-पिता एवं अध्यापिकाओं की एक बैठक होनी चाहिए। यह बैठक अधिकांशत: शनिवार के दिन रखी जानी चाहिए। इसमें बच्चे की प्रगति के साथ-साथ उससे संबंधित अन्य बातचीत भी की जानी चाहिए। दिसंबर एवं मार्च के महीने में बच्चे की प्रगति-पत्रिका माता-पिता को दिखाई जानी चाहिए। और उस पर चर्चा होनी चाहिए। विद्यालय में हर तीन महीने बाद बच्चे की लंबाई एवं वज़न नापा जाना चाहिए और इसका रिकॉर्ड माता-पिता को दिखलाया जाना चाहिए। यदि किसी बच्चे की कोई विशेष आवश्यकता होती है तो अध्यापिका को माता-पिता से बातचीत करनी चाहिए और पूरा सहयोग देने की कोशिश करना चाहिए।

सप्ताह में दो बार बच्चों को खाने के लिए पौष्टिक व्यंजन दिए जाने चाहिए । कभी मौसम के ताज़े फल, दूध, नींबू पानी, गजक, रेवड़ी इत्यादि दिए जाने चाहिए तो कभी विद्यालय में पकाकर बच्चों को खाने के लिए खीर-हलवा, पुलाव आदि दिया जाना चाहिए। व्यंजनों के चयन में पौष्टिकता पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। स्कूलों में बच्चों का जन्म दिवस मनाया जाना चाहिए। इसके लिए एक माह में जितने भी बच्चों का जन्म-दिन पड़ता है उन सबके जन्म-दिन एक ही दिन मनाए जा सकते हैं। इस अवसर पर स्कूल में विशेष भोजन बनाया जा सकता है। खाना पकाते समय सफ़ाई पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

स्कूल में प्राथमिक उपचार सामग्री उपलब्ध रहनी चाहिए। आपातकालीन स्थिति में बच्चों को डॉक्टरों को दिखाया जाना चाहिए।

स्कूल में एक पुस्तकालय होना ही चाहिए और यदि यह पुस्तकालय कक्षा में हो तो अच्छा रहता है। प्रत्येक कक्षा के बच्चों को किताबों को छूने, उठाने,

उलटने-पलटने की स्वतंत्रता होनी चाहिए और उन्हें किताबों से कविता कहानियाँ पढ़कर सुनाई जानी चाहिए। जब भी किताबें उठाकर उनमें बने चित्र देखेंगे और दिखाएँगे तो बच्चों में पुस्तकों के प्रति लगाव बढ़ेगा और उनके पढ़ने की शुरुआत होगी।

अभिभावकों की भूमिका एवं सहयोग

पूर्व प्राथमिक शिक्षा आयोजित करने वाले व्यक्ति को चाहे वह कोई शिक्षक हो या शिक्षिका या कार्यक्रम समन्वयक हो उसे माता-पिता के साथ बराबर संपर्क बनाए रखना चाहिए। वर्ष में हर तीन माह बाद अभिभावकों के साथ शिक्षक शिक्षिकाओं की बैठक होनी चाहिए। अभिभावकों के साथ बैठक में निम्न बिंदुओं पर चर्चा की जा सकती है।

अभिभावकों को बताएँ कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे बच्चे उम्र के अनुसार अभी पढ़ने-लिखने के लिए मानसिक व शारीरिक रूप से तैयार नहीं हैं। उन्हें खेल द्वारा ही शिक्षा देनी चाहिए क्योंकि खेल-खेल में बच्चों की अँगुलियाँ लिखने के लिए तैयार हो जाती हैं। बच्चे अच्छी व सही भाषा बोलना सीखते हैं। बच्चों की सोचने-समझने की कुशलता बढ़ती है। बच्चे आगे की कक्षा में जाने के लिए तैयार होते हैं।

उनसे चर्चा करें कि वे किस तरह से पूर्व प्राथमिक शाला या आँगनवाड़ी में सहयोग दे सकते हैं। प्रतिदिन एक माँ शाला में आकर मदद करे बच्चों को सही समय पर शाला भेजें बाकी माता-पिता को आँगनवाड़ी के महत्व के बारे में बताएँ और उन्हें अपने बच्चों को शाला भेजने के लिए प्रोत्साहित करें। बताएँ कि माता-पिता अपने बच्चे के विकास के लिए घर पर क्या कर सकते हैं।

बताएँ कि 3 वर्ष की आयु से छोटे बच्चों के लिए भी उनको बहुत कुछ क्रियाएँ करना चाहिए, जैसे — बच्चों से बातचीत करना, खिलौने बनाना व बच्चों के साथ खेलना, प्यार का व्यवहार करना, बाहर घुमाने ले जाना व आस-पड़ोस की जानकारी देना इत्यादि।

बच्चे के सर्वांगीण विकास की ज़िम्मेदारी समान रूप से विद्यालय एवं माता-पिता की है। अत: विद्यालयों में अभिभावकों की प्रतिभागिता कार्यक्रमों के आयोजन एवं संचालन में सुनिश्चित की जानी चाहिए। माता-पिता से अनुरोध किया जाना चाहिए कि वे—

- अपने बच्चे के शैक्षिणक एवं समग्र विकास के लिए स्कूल के नियमित रूप से संपर्क में रहें।
- पता या टेलीफोन नंबर बदलने पर तुरंत स्कूल को सूचित करें।
- बच्चों से संबंधित कोई समस्या होने पर इसकी चर्चा कक्षा अध्यापिका एवं मुख्याध्यापिका से करें।
- बच्चों को नियमित रूप से एवं समय पर स्कूल आने के लिए प्रोत्साहित करते हुए यह सुनिश्चित करें कि बच्चा नियमित एवं समय पर स्कूल आए।
- बच्चों को साफ़ कपड़े एवं आरामदायक जूते, चप्पल पहनाकर विद्यालय में भेजें।
- बच्चों को टिफ़िन में घर का बना हुआ पौष्टिक भोजन एवं पीने के लिए स्वच्छ पानी दें।
- स्कूल के संचालन में स्कूल का सहयोग करें।

वहीं दूसरी तरफ यदि अभिभावक बच्चों के लिए आयोजित क्रियाओं में भाग लेना चाहते हैं या कविताएँ, कहानियाँ, बाल-गीत, कठपुतलियाँ तैयार करने, खाने की पौष्टिक चीज़ें बनाने की सरल विधि बतलाने इत्यादि में सक्षम हैं और स्कूल में सहयोग करना चाहते हैं तो समय-समय पर उन्हें स्कूल में आमंत्रित किया जाना चाहिए।

संस्तुतियाँ

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा की पूर्व की शिक्षा के रूप में स्वीकार करते हुए प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था को अनिवार्य करना चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए इस क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक शिक्षिकाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा केंद्रों तथा प्राथमिक विद्यालयों में सामंजस्य (जुड़ाव) होना चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा व प्राथमिक शिक्षा से संबंधित सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिशु-उद्दीपन का तत्व जोड़ा जाना चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में संदर्भ साहित्य तथा प्रशिक्षण सामग्री की कमी है जिसका विकास किया जाना आवश्यक है।
- सीधे कक्षा 1 में प्रवेश लेने वाले प्रत्येक बच्चे को विद्यालयोन्मुखी (school readiness) कार्यक्रम का लाभ मिलना चाहिए। स्कूल रेडिनेस को कक्षा 1 के पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग भी बनाना चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा एक विशिष्ट प्रकार की शिक्षा है जिसका स्वरूप अन्य स्तरों पर दी जाने वाली शिक्षा से भिन्न है। इसीलिए इसे अधिक प्रभावी और गतिशील बनाने के लिए निम्नलिखित संगठन, संस्था, विभागों को सक्रिय सहयोग देना चाहिए, जैसे – ग्राम शिक्षा समिति, नर्सरी स्कूल महिला मंडल, सामाजिक कार्यकर्ता, अभिभावक समुदाय-संपर्क कार्यक्रम। इसके लिए हमें मीडिया; आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं, वीडियो फ़िल्में, इंटरनेट, एवं अन्य माध्यम, जैसे – चाट्र्स, पोस्टर्स, नुक्कड़ नाटक आदि का प्रयोग भी करना चाहिए।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा का प्रारंभिक बिंदु है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश लेने वाले बच्चे से किसी भी पूर्व ज्ञान की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। अत: इतने छोटे बच्चों की प्रवेश परीक्षा नहीं लेनी चाहिए।
- नर्सरी में प्रवेश के बाद (3 Rs- Reading, Writing, Arithmetic) सीखने पर विशेष बल दिया जाता है। जबकि इतने छोटे बच्चों को हमें सिर्फ पढ़ने, लिखने व गणित सीखने के लिए तैयार करना चाहिए। उदाहरण के लिए, लिखना शुरू करने से पहले हमें बच्चों को लिखने की तैयारी के लिए क्रियाएँ करानी चाहिए जैसे – मोती पिरोना, बिंदु से बिंदु जोड़ना, आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचना। पूर्व प्राथमिक शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा का लघु रूप (downward extension) समझकर बच्चों को इस स्तर

पर पढ़ाने-लिखाने एवं गणित सिखाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। बच्चे जिज्ञासु एवं खोजी प्रवृत्ति के होते हैं। अत: उन्हें ऐसा अनुकूल वातावरण दिया जाना चाहिए जिसमें वे विविध प्रकार के अनुभव स्वयं प्राप्त कर सकें तथा उनमें सही संबंधों का निर्माण हो सके।

- इतने छोटे बच्चों को गृहकार्य दिया जाना उचित नहीं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य स्कूल वातावरण को आनंददायक एवं रुचिकर बनाना है "थ्री आर्स" पढ़ना लिखना गणित को महत्व देना नहीं है। अत: गृहकार्य नहीं दिया जाना चाहिए।
- प्राय: यह पाया गया है कि बहुत से नर्सरी स्कूल पूर्व प्राथमिक शिक्षा का कार्यक्रम मनमाने ढंग से चलाते हैं। इसमें पढ़ने-लिखने व गणित का विधिवत शिक्षण दिया जाता है जो बच्चों को लाभ पहुँचाने के स्थान पर हानि पहुँचाता है। इस संबंध में कानून बनना चाहिए कि वही व्यक्ति नर्सरी कक्षा में सिखा सकता है जो पूर्व प्राथमिक शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुका हो।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में संदर्भ साहित्य प्रचार साहित्य तथा शिक्षण सामग्री की आवश्यकता होती है। एक ऐसी किट तैयार करनी चाहिए जिसमें सर्वांगीण विकास के सभी पक्षों से संबंधित खेल-सामग्री हो। किट का मूल्य निर्धारित करके उसे सबके लिए सुलभ कराया जाना चाहिए।
- कार्यक्रम में एकरूपता लाने के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा का एक वार्षिक एवं दैनिक कार्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए जिस पर सभी शिशु शिक्षा का संस्थान अमल करें।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा विधियों का प्रयोग कक्षा 1 और 2 में भी किया जाना चाहिए।
- कक्षा 1, 2 के शिक्षकों को भी बाल केंद्रित तथा रोचक शिक्षण विधियों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में केंद्र-बिंदु बच्चा है और शिक्षिका उसकी पथ-प्रदर्शिका है। इसलिए शिक्षिका का दायित्व है कि वह बच्चे को उसकी आयु, विकास एवं रुचि के अनुसार शिक्षा ग्रहण करने में मदद करे। बच्चे को सही और गलत का अंतर सिखाए। शिष्टाचार तथा स्वस्थ आदतों का विकास करे। बच्चों का सम्मान करे। सहनशील रहे। जिन मूल्यों, मनोवृत्तियों, वांछित संस्कारों एवं आदतों का बीजारोपण हम बच्चे में करते हैं बड़े होने पर उसके व्यक्तित्व में हम उन्हीं का विकसित रूप पाते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा मानव संसाधन विकास की एक आवश्यक शर्त है। अत: पूर्व प्राथमिक शिक्षा के महत्व स्वरूप क्रियाकलापों और बालक-बालिकाओं पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करना आवश्यक है।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*. नयी दिल्ली.

कौल, विनीता और रोमिला सोनी. 1997. 'आपकी आँगनवाड़ी आपके सवाल'. *पूर्व प्राथमिक शिक्षा.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

भारत सरकार. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (संशोधित संस्करण).* मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नयी दिल्ली.

मुरलीधरन, आर. 1991. *शिशु उद्दीपन के लिए प्रेरक क्रियाएँ.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

सोनी, रोमिला. राजेन्द्र कपूर एवं कृष्णकांत वशिष्ठ. 2003. *पूर्व प्राथमिक शिक्षा, एक परिचय.* एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.